CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यहूदी धर्म क्या कहता है ?

सं ३५

वि० १२४

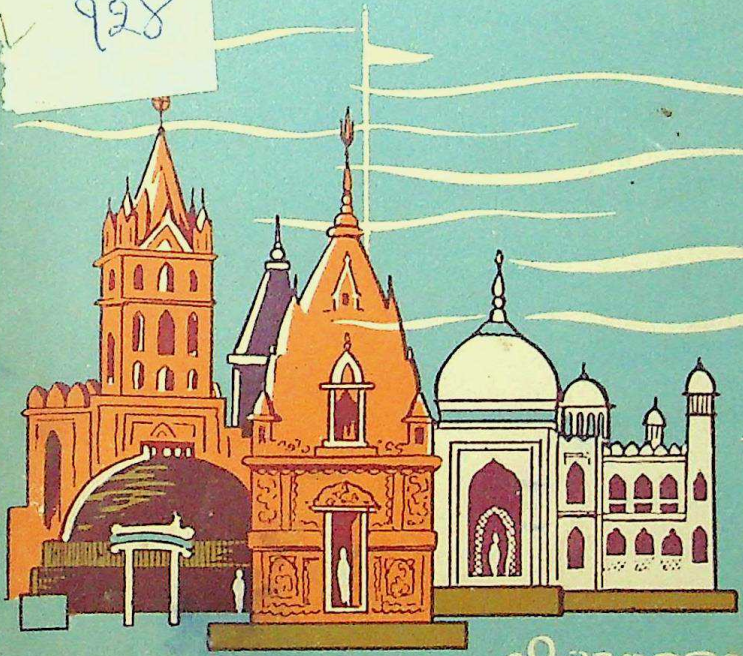

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धर्म क्या कहता है ? : ८

यहूदी धर्म क्या कहता है ?

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

सर्व - सेवा - संघ - प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशक : मंत्री, सर्व-सेवा-संघ,
राजघाट, वाराणसी
संस्करण : प्रथम : दिसम्बर, १९६३ : ३,०००
द्वितीय : जनवरी, १९६५ : ५,०००
कुल प्रतियाँ : ८,०००
मुद्रक : नरेन्द्र भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस,
गायघाट, वाराणसी
मूल्य : ६० पैसे

Title : YAHOODI DHARMA KYA KAHATA HAI ?
Author : Shrikrishna Datta Bhatta
Subject : Religion
Publisher : Secretary,
Sarva Seva Sangh,
Rajghat, Varanasi
Edition : Second
Copies : 5,000; January, '65
Total Copies : 8,000
Price : 60 Paise

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्र का श की य

पृथ्वी परमेश्वरकी सारी ! भूमि न तो बेची जाय, न भूमि-पर किसीकी मिलकियत रहे। बीच-बीचमें वह परती छोड़ दी जाय गरीबोंको चुननेके लिए, पशु-पक्षियोंको चुगने-चरनेके लिए ——यह है यहोवाका पवित्र आदेश।

हमारे भूदान-आन्दोलनकी भी यही बुनियाद है, यहूदी धर्मकी भी। यहोवाके दस पवित्र आदेश; मूसा और दूसरे नबियोंके उपदेश मानवको सत्य और न्याय, प्रेम और करुणा, श्रम और सदाचारकी ही प्रेरणा देते हैं।

हमारी 'धर्म क्या कहता है ?' पुस्तक-मालाकी यह आठवीं पुस्तक है। वैदिक (३ भाग), जैन, बौद्ध, पारसी धर्मपर तो पहले ही पुस्तकें निकल चुकी हैं, ताओ और कनफ्यूश, ईसाई, इस्लाम और सिख धर्मपर भी पुस्तकें निकली हैं। सभी धर्मोंके मूलमें सत्य, प्रेम और करुणाकी ही त्रिवेणी प्रवाहित हो रही है। उसमें जो स्नान करेगा, उसका कल्याण हुए बिना न रहेगा।

हमारे अनुरोधपर इजराइलके बम्बई स्थित वाणिज्य दूतावासने कुछ साहित्य हमारे पास भेजनेकी कृपा की, उसके लिए हम उसके आभारी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुक्रम

१. यहूदी धर्म ५–१५

२. हज़रत मूसा १६–२०

३. तोरामें कहा है २१–३५

१. परमेश्वर यहोवा २१, २. दस आज्ञाएँ २२, ३. सबपर प्रेम और दया २३, ४. पवित्र बनो : पवित्र रहो २७, ५. सही बोलो, सही तौलो २८, ६. रिश्वत लेना गलत ३०, ७. दासको मुक्त करो ३०, ८. पिरथी परमेसुरकी सारी ३१, ९. जमीन जिसकी हो, उसे दो ३३, १०. न ब्याज लो, न मुनाफा ३४, ११. शाप पड़े उसपर ३५ ।

४. नबीने कहा है ३६–४०

१. दीनदयाल यहोवा ३६, २. सत्य मार्गपर चलो ३७, ३. गरीबोंको मत सताओ ३७, ४. शराब पीनेवालेको ही पी जाती है ! ३८, ५. थू है उसपर ! ३८, ६. परमेश्वर हमसे क्यों दूर है ? ३९, ७. धर्मात्मा कौन है ? ४० ।

५. नविश्तेमें कहा है ४१–५९

१. यहोवाको नापसन्द बातें ४१, २. कर भला, होगा भला ४४, ३. अंगूरी हाला डस लेती है ४५, ४. पेटू मत बन ४६, ५. आलस छोड़, मेहनत कर ४७, ६. मन शुद्ध कर ४९, ७. झगड़ा बढ़ने ही न दे ५१, ८. बोल तो बोल अमोल है ५२, ९. विषय-वासनासे बच ५३, १०. माता-पिताका आदर कर ५५, ११. भली पत्नी ५६, १२. झगड़ालू पत्नी ५७, १३. कामोंकी कसौटी ५८ ।

६. तालमुदमें कहा है ६०–६८

१. यहोवा : दयालु और न्यायी ६०, २. ईश्वरीय गुण अपनाओ ६२, ३. हिंसा न करो ६२, ४. ईमानदारी बरतो ६३, ५. वाणीके दोष छोड़ो ६४, ६. किसीसे घृणा न करो ६५, ७. दान : दया : सत्कर्म ६६, ८. विचार पवित्र रखो ६८ ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: १ :

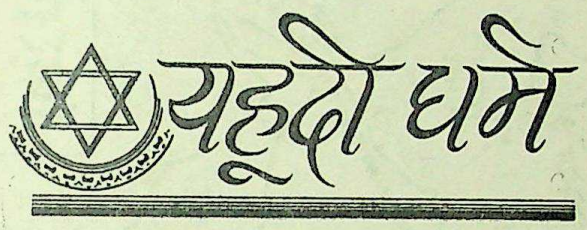

'ये मूर्तियाँ किसने तोड़ीं हैं ? तुमने तोड़ीं हैं ?'

'नहीं पिताजी, मैंने नहीं तोड़ीं।'

'तब किसने तोड़ीं ?'

'जिस मूर्तिकी बगलमें कुल्हाड़ी रखी है, उसीने तोड़ीं हैं।'

'क्यों ?'

'इसलिए कि मूर्तियाँ आपसमें लड़ गयीं थीं।'

'झूठ!'

'झूठ क्यों पिताजी ?'

'मैं जानता हूँ कि मूर्तियाँ न तो आपसमें लड़ सकतीं हैं और न इधरसे उधर हिल-डुल सकतीं हैं। यह सब तेरी करतूत है।'

'अच्छा, मान लें कि यही बात है तो यह बताइये पिताजी कि ये सब मूर्तियाँ किस कामकी हैं ?'

'इनकी पूजा होती है।'

'किन्तु कैसी विचित्र बात है पिताजी कि आँख रहते ये देख नहीं पातीं, कान रहते सुन नहीं पातीं, पैर रहते चल नहीं पातीं!'

'सो तो है बेटा! पर···'

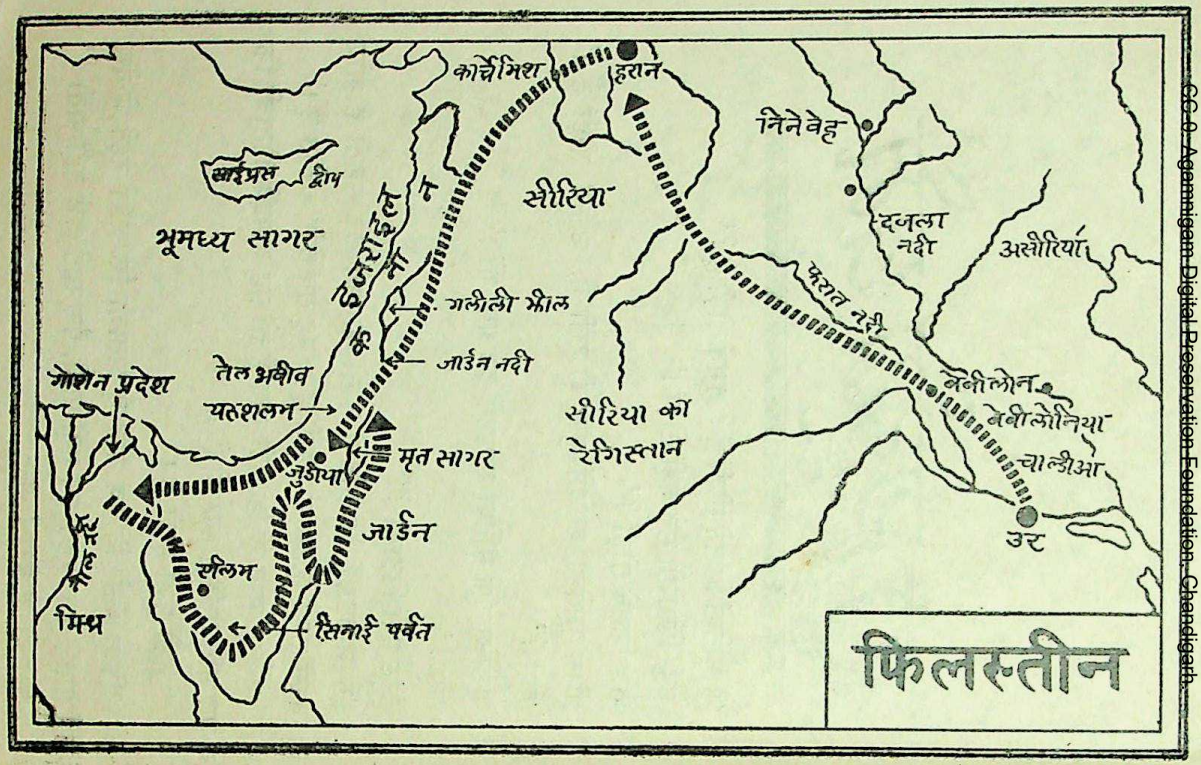

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'पर क्या ? ऐसी मूर्तियोंसे क्या मतलब है पिताजी ? हम ही इन्हें बनाते हैं, हम ही इनकी पूजा करते हैं !'

'तब हम किसकी पूजा करें बेटा ?'

'पूजा करनी चाहिए उसकी, जिसने सूर्य बनाया है। चन्द्र बनाया है। नक्षत्र बनाये हैं। जो पानी बरसाता है, जो गर्मी लाता है, जो सरदी लाता है। जो जमीनको हरा-भरा बनाता है। जो भेड़ोंके पेटसे बच्चा पैदा करता है।...'

नूहके वंशमें पैदा होनेवाले तेराहको अपने बेटे अब्रामकी ये बातें जँचीं तो बहुत, पर वह चुप हो गया। 'उर'में, जहाँ वह रहता था वहाँ, जब सभी लोग मूर्तियोंको पूजते थे, तो वह कैसे उनका विरोध करता ?

फिलस्तीन

भूमध्यसागरके पास एक देश है—फिलस्तीन। इधर एशिया है, उधर यूरोप और बगलमें अफ्रीका। आजके 'इराक' देशमें फरात नदीके पास अलमुकय्यर (बितूमेज) पहाड़ है। कोई चार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हजार साल पहले वहाँ एक समृद्ध नगर था—उर । २॥ लाखसे ५ लाखतककी आबादी थी उसकी।

हारानका निवासी तेराह उसी नगरमें आकर बस गया था। कहते हैं कि वह मूर्तियाँ बनाया करता था। मूर्तियाँ बनाता ही नहीं था, उनकी पूजा भी करता था। पर, बेटेकी बातोंसे वह बड़े पसोपेशमें पड़ गया।

तेराहका देशत्याग

तेराहको लगा कि यह सारा देश मूर्तियोंको पवित्र मानता है, उनकी पूजा करता है, इसलिए यहाँ रहना ठीक नहीं। उसने उर छोड़नेका फैसला किया।

तेराहके तीन बेटे थे—अब्राम, नाहोर और हारान। अब्रामकी पत्नी थी सारै। हारानका बेटा था लूत।

तेराह एक दिन अब्राम, सारै और लूतको लेकर उर नगरसे कनान प्रदेशके लिए चल पड़ा। पर, वहाँ न जाकर वह अपने हारान देशमें जाकर बस गया। वहीं वह मर गया।

इब्री और हिब्रू

पुरानी बाइबिलमें, यहूदी धर्मग्रन्थमें लिखा है कि परमेश्वर यहोवाने अब्रामसे कहा कि अपने देश, जन्मभूमि और पिताके घरको छोड़कर तू उस देशमें चला जा, जो मैं तुझे दिखाऊँगा। मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊँगा और तुझे आशीष दूँगा। तेरा नाम ऊँचा करूँगा। भूमण्डलके सारे कुल तुझसे आशीर्वाद पायेंगे।

यहोवाके इस वचनको सुनकर अब्राम अपनी पत्नी, लूत और अपनी धन-सम्पत्तिके साथ कनान प्रदेशको निकल पड़ा। वह सबके साथ कनान देशमें आ गया।[१]

१. पुरानी बाइबिल, उत्पत्ति : १२। १–५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब्राम शेकेममें बसा। शेकेम है यरूशलमसे २७ मील उत्तर। आज वह बलाता कहलाता है। फिर वह दक्षिणकी ओर पहाड़ी प्रदेश नेगेवकी ओर बढ़ा। उसने कुछ लोगोंको अपने नये धर्ममें दीक्षित किया।

कनानके रहनेवालोंने अब्रामको 'इब्री' कहा। इब्री माने वे लोग, जो दजला और फरात नदीके उस पारसे आये हैं।

इब्रीका कुटुम्ब कहलाया 'इब्रीस'। 'इब्रीस' शब्दका ही बिगड़ा रूप है, 'हिब्रू'।

मिस्रसे वापसी

कनानमें अकाल पड़नेपर अब्राम उससे बचनेके लिए मिस्र चला गया। मिस्रके राजा फरोहाने धन-धान्य देकर उसे बिदा किया। वह फिर नेगेवको लौटा। वहाँसे वह हेब्रोनके पास मेमरेके मैदानमें जाकर अन्तिम रूपमें बस गया।

यहाँपर यहोवाने उसे दर्शन देकर कहा : मैं वही यहोवा हूँ, जो तुझे कसूदियोंके उर नगरसे निकालकर यहाँ इसलिए लाया कि तुझे इस देशका अधिकार दूँ।

इसराइल

यहोवाने अब्रामसे कहा कि तेरा वंश तारोंकी तरह अनगिनत होगा। मैं तुझे नील नदीसे लेकर फरात नदीतकका सारा भूभाग दूँगा। तेरा नाम अब्रामके बजाय 'इब्राहीम'—सबका पिता—होगा। मेरे वचनके प्रतीक रूपमें अपना, अपने वंशवालोंका, अपने दासोंका खतना करा। बच्चेके पैदा होनेपर आठवें दिन यह संस्कार कर।

इब्राहीमका बेटा हुआ इसहाक। इसहाकके जुड़वाँ बेटे हुए—एसाव और याकूब। याकूब 'इसराइल' कहलाया। याकूबके

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१२ पुत्र हुए । उसका छोटा बेटा था—यूसुफ। एक था यहूदा। उसीसे सारी जातिका नाम पड़ा—यहूदी।

कैदीसे मन्त्री

यूसुफ सुन्दर था, चरित्रवान् था। पिताका उसपर प्यार था। भाइयोंने डाहसे उसे मिस्र जानेवाले एक कारवाँको बेच दिया। कारवाँका मालिक उसके कामसे खुश था। कुरान शरीफमें आता है कि मालिककी पत्नी जुलेखा उसपर लुभा गयी। पर, उसके न डिगनेपर उसने उसे कैदमें डलवा दिया।

राजाने सपना देखा। उसने यूसुफको कैदसे छुड़ाकर मन्त्री बना लिया। उसने बहुत दिनोंतक मिस्रमें अपना शासन चलाया और जमीन आदि दिलवाकर इसराइलियोंकी वहाँपर जड़ जमा दी। आये थे सत्तर लोग, हो गये सात लाख।

मिस्रके इसराइली रहते थे मिस्रमें, पर मानते थे इब्राहीमको, इसहाकको, याकूबको। यहोवाकी ही वे पूजा करते थे। मिस्रवाले उनसे घृणा करते थे। उनपर विश्वास नहीं करते थे। यूसुफके बाद उनमें कोई नेता नहीं जनमा। वे नागरिक अधिकारोंसे वंचित होकर गुलामों जैसा जीवन बिताते थे।

मूसा द्वारा उद्धार

बहुत दिनोंके बाद हजरत मूसा पैदा हुए। मिस्रमें रहनेवाले इसराइलियोंकी दयनीय दशा उनसे न देखी गयी। उन्होंने यहूदी जातिका उद्धार किया और वे उन्हें अपने देश वापस लौटा ले गये। कहते हैं कि मूसाको सिनाइ पर्वतपर यहोवाका दर्शन हुआ और उन्होंने १० पवित्र आदेश दिये। मूसाने उसी आधारपर अपनी व्यवस्था रची।

मूसाके बाद कुछ दिन फिलस्तीनपर इसराइलियोंका राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहा । पर समरिया और जुडाका राज्य अधिक दिनतक नहीं चल सका । बहुत दिनोंतक लड़ाई-झगड़े चलते रहे। यहूदी लोग संसारमें जगह-जगह जाकर बस गये ।

नये राष्ट्रका उदय

यहूदी लोग विश्वके अनेक देशोंमें फैले। उनपर तरह-तरहके अन्याय और अत्याचार हुए। फिर भी, अनेक देशोंमें रहते हुए भी उन्होंने अपना धर्म नहीं छोड़ा। भाषा अलग, व्यवहार अलग, रीति-रिवाज अलग । यहोवापरसे उनका विश्वास नहीं डिगा। उन्हें यह भरोसा रहा कि एक दिन यहोवा उनका अवश्य ही उद्धार करेगा और वे अपने मूल देश--फिलस्तीनमें जाकर निवास कर सकेंगे ।

मातृभूमिमें लौटनेकी भावना यहूदियोंमें धीरे-धीरे पनपती रही। बीसवीं शताब्दीके आरम्भसे उनके आन्दोलनने जोर पकड़ा। अन्तमें वे सफल हुए। १५ मई १९४८ को यहूदियोंके नये राष्ट्रका उदय हुआ। नाम उसका रखा गया--इजराइल।

इजराइलका मूल धर्म है--यहूदी धर्म। यों, कुछ मुसलमान भी वहाँ हैं, कुछ ईसाई भी।

यहूदी प्रार्थना

यहूदी लोग प्रार्थना करते हैं :

"पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, यहोवा ही है,
जगत् और उसमें निवास करनेवाले भी।
क्योंकि, उसीने उसकी नींव समुद्रोंके ऊपर दृढ़ करके रखी,
और महानदोंके ऊपर स्थिर किया है,
यहोवाके पर्वतपर कौन चढ़ सकता है ?
और उसके पवित्र स्थानमें कौन खड़ा हो सकता है ?

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसके काम निर्दोष हैं, हृदय शुद्ध है,
जिसने अपने मनको व्यर्थ बातोंकी ओर नहीं लगाया,
और न कपटसे शपथ खायी है,
वह यहोवाकी ओरसे आशीष पायेगा,

और अपने उद्धार करनेवाले परमेश्वरकी ओरसे धर्मात्मा ठहरेगा ।"[१]

:०: :०: :०:

"परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है !
क्या ही धन्य है वह पुरुष, जो उसकी शरण लेता है ।
हे यहोवाके पवित्र लोगो, उसका भय मानो ।"[२]

:०: :०: :०:

"अपनी जीभको बुराईसे रोक रख,
अपने मुँहकी चौकसी कर कि उससे छलकी कोई बात न निकले ।
बुराईको छोड़ और भलाई कर,
मेलको ढूँढ़ और उसीका पीछा कर ।
यहोवाकी आँखें धर्म करनेवालोंपर लगी हैं ।"[३]

यहूदी मान्यता

ईश्वर जीव और जगत्का रचनेवाला है ।
ईश्वर एक है ।
ईश्वर प्रेममय है ।
ईश्वर करुणामय है ।

---

१. भजन संहिता २४।१–५ । २. वही, ३४।८-९ । ३. वही, ३४।१३–१५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ईश्वर सर्वव्यापी है।

ईश्वर निकटसे भी निकट है।

ईश्वर दूरसे भी दूर है।

ईश्वर अंधकारकी तरह रहस्यमय है।

ईश्वर सूर्यके प्रकाशकी तरह स्पष्ट है।

ईश्वर सत्कर्मसे, प्रेमसे, करुणासे, सबके साथ स्नेहभरा व्यवहार करनेसे प्रसन्न होता है।

ईश्वरका नाम है––यहोवा।

यह है यहूदी धर्मकी मूल मान्यता।

धर्मग्रन्थ

पुरानी बाइबिल (Old Testament) यहूदियोंका मूल धर्मग्रन्थ है। उसके तीन भाग हैं––तोरा, नबी और नविश्ते (कुतूबीम)।

तोरामें पुरानी बाइबिलके पहले पाँच अध्याय हैं : उत्पत्ति (Genesis), निर्गमन (Exodus), लैव्य व्यवस्था (Levitious), गिनती (Numbers) और व्यवस्था-विवरण (Deuteronomy)। सिनाई पर्वतपर यहोवाने मूसाको जो दस आदेश दिये हैं, उनके अलावा इसमें ६०० से ऊपर अन्य आदेश भी हैं। खान-पान, धार्मिक उत्सव, पर्व, त्योहार, अपराध, दण्ड आदि अनेक विषय इसमें आये हैं।

नबीमें पुराने नबियोंकी––यहोशू, न्यायी, सैमुएल और राजाओं-की पुस्तकें हैं। पिछले नबी हैं––यशायाह, यर्मियाह और यहेजकेल। छोटे-छोटे १२ नबी हैं––होशे, बोएल, आमोस, ओबद्याह, यीना, मीका, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गै, जकर्याह और मलाकी।

इन नबियोंने अपने उपदेशोंसे यहूदी-समाजमें जीवन और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रेरणा फूँकी । उनके पवित्र उपदेश बाइबिलके इस भागमें दिये गये हैं ।

नविश्तेमें पुरानी बाइबिलकी बची हुई पुस्तकें हैं--भजन, नीति और अयूब, रूत, सभोपदेशक, दानियल, अज्रा, गहेम्याह आदिकी पुस्तकें ।

तालमुद

तोरा, नबी और नविश्तेके अलावा यहूदी धर्ममें तालमुदका विशेष स्थान है । इसमें धर्मकी व्यवस्था-सम्बन्धी बातें विस्तारसे दी गयी हैं । आदरकी दृष्टिसे बाइबिलके बाद तालमुदका ही नाम आता है । इसमें यहूदी धर्मका विचार कुछ अधिक विकसित हुआ है । समय-समयपर यहूदी समाजके सामने जो समस्याएँ आती गयीं, उनके समाधानके लिए जो व्यवस्थाएँ दी गयीं, वे तालमुदमें मिलती हैं ।

ये व्यवस्थाएँ मौखिक रूपमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहीं । धर्मोपदेशक लोग, रब्बी लोग इनके आधारपर व्यवस्थाएँ देते रहे ।

तीन पंथ

यहूदी धर्ममें ३ पंथ हैं : कट्टर पंथ, उदार पंथ और सुधार पंथ ।

दूसरे धर्मोंमें जिस तरह भाँति-भाँतिके आचार होते हैं, उसी तरहके आचार यहूदी धर्ममें भी पाये जाते हैं । कट्टरपंथी यहूदी उनका बाकायदा पालन करते हैं । वे खान-पान, सेबाथ आदिकी सभी बातें मानते हैं । उदारपन्थी उतने कट्टर नहीं, पर वे तोराको पूरा आदर देते हैं । सुधारपन्थी तोरा पढ़ते हैं अवश्य, पर तर्क और अनुभवकी कसौटीपर कसकर ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धर्मका सार

तोरामें हम परमेश्वर यहोवाके दस पवित्र आदेशोंको देखें, नबियोंके उपदेशोंपर ध्यान दें, नविश्तेकी बातोंमें गहराईसे उतरें, तो हमें यहूदी धर्मका सार प्राप्त हो जायगा।

यहूदी धर्म कहता है कि ईश्वर एक है। उसे प्रेम करना है तो मनुष्यसे प्रेम करो, अपने भाइयोंसे प्रेम करो। यह प्रेम होना चाहिए पूरे मनसे, वचनसे और कर्मसे।

अन्याय न करो। शोषण न करो। ब्याज न लो। मुनाफा न लो। किसीको सताओ मत। जमीनकी सेवा करो। गुलामोंको मुक्त करो। सदाचारका पालन करो। श्रम करो। लालच मत करो—यही तो है यहोवाका आदेश।

प्रेम, करुणा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, श्रमनिष्ठा, भूमिकी सेवा, दुखियोंकी सेवा, अनाथों, पीड़ितों और विधवाओंकी सेवा, सदाचार और पवित्रता——यही तो है यहोवाको प्रसन्न करनेका उपाय।

हमारे भूदान और ग्रामदान-आन्दोलनके मूलमें भी तो ये ही मूल प्रेरणाएँ हैं।

काश, हम इस ओर बढ़ सकें! ●

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: २ :

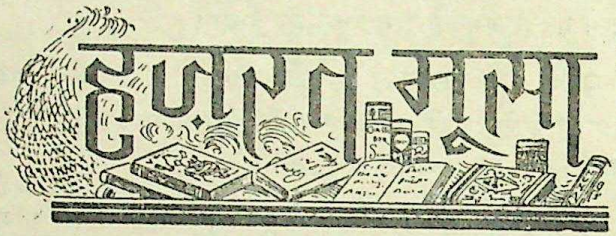

'मूसा ?'

'कौन हो तुम ?'

'नहीं पहचानते मुझे ? मैं हूँ तुम्हारी बहन—मरियम !'

मूसा अवाक् होकर देखने लगा।

उसकी आँखोंके सामने एक स्त्री रस्सीपर लटकी थी। हाथ-पैर बँधे थे। और भी ४ आदमी उसकी बगलमें इसी तरह लटक थे। मिस्री सरदार सबपर चमड़ेके कोड़े बरसा रहे थे !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूसाको देखकर सरदारोंके कोड़े रुक गये । मूसा मरियमके पास चला गया। उसके बंधन खुल गये। सरदार सब लोगोंको बन्धन-मुक्त कर वहाँसे हट गये ।

'तुम्हारा यह हाल मरियम ?'

'हाँ भैया, मेरा ही क्यों ? मिस्रमें रहनेवाले हम सब इस-राइलियोंका यही हाल है ।'

'ओह, बड़ी भयंकर हालत है मरियम !'

'मैंने एक सपना देखा है भैया ।'

'क्या ?'

'तुम जलपर फेंके जाओगे । वही जल एक दिन फट जायगा ' तुम हमारी जातिका उद्धार करोगे ।'

'मैं ?'

'हाँ भैया, तुम । तुम मेरे सगे भैया हो । हमारी माँने तुम्हें डरसे फेंक दिया था । राजकुमारीने पाल लिया । माँने ही दाईके रूपमें तुम्हें दूध पिलाया था !'

जन्म और बचपन

ईसासे डेढ़ हजार साल पहले मूसा हुए थे—एक यहूदीके घर । उनके पिताका नाम था अमराम, माँका योथेबेद । उनके एक बहन थी मरियम ।

मिस्रकी सरकारी आज्ञा थी कि जो भी यहूदी बच्चा पैदा हो, वह नील नदीमें बहा दिया जाय। राजाको किसीने कह दिया कि कोई इसराइली ही मिस्रका नाश करेगा । तभीसे यह आज्ञा जारी हुई ।

राजकन्या बिटियाहको कोढ़ था । वह नील नदीमें नहाने जाती । वहीं मूसा बहता हुआ उसे मिला। उसे बड़ी दया लगी ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसने उसे बचा लिया और दाईको सौंप दिया दूध पिलानेको। संयोगसे दाई मूसाकी माँ ही थी।

मूसा बड़ा हुआ राजमहलमें। उसे अच्छी शिक्षा-दीक्षा मिली।

यहूदियोंपर अत्याचार

बड़े होनेपर मूसाने महलसे बाहर निकलकर देखा, तो पता चला कि यहूदियोंपर मिस्री लोग बहुत अत्याचार करते हैं। गोशेन गया तो मरियमकी हालत उसने देखी। और भी जगह-जगह उसने ऐसे ही अत्याचार देखे।

एक बार मूसाने देखा कि एक मिस्री एक यहूदीको बुरी तरह पीट रहा है, तो उसने उसका कोड़ा उससे छीन लिया। उसी कोड़ेसे उसने उस मिस्रीकी इतनी मरम्मत की कि वह मर ही गया! उसे वहीं बालूमें तोप दिया गया।

महलका त्याग

मूसासे ये सब अत्याचार बर्दाश्त न हुए। चालीस सालकी उम्रमें वह राजमहलका सुख छोड़कर बाहर निकल पड़ा।

मिद्दानके याजक येत्रोने अपनी बेटी सिप्पोराह मूसाके साथ ब्याह दी। चालीस सालतक वह ससुरालमें पश चराता रहा।

ईश्वरका दर्शन

एक दिन मूसा होरेब पहाड़के पास बकरियाँ चरा रहा था कि उसे ईश्वरीय वाणी सुनाई पड़ी—'इसराइली लोग मिस्रमें दास हैं। वे कष्टमें हैं। उन्हें यहाँसे उस देशमें ले चल, जिसे देनेकी मैंने तेरे पितरोंसे प्रतिज्ञा की है।'

'आप कौन हैं?'—मूसाने पूछा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'एहे अशेर एहे !' ('सोहमस्मि'—'मैं वही हूँ, जो मैं हूँ !')

इसीको कहते हैं 'यहोवा' (वही है वह)। सर्वव्यापी परमेश्वर।

जातिका उद्धार

यहोवाके आदेशका पालन करनेको मूसा तैयार हो गया।

मिस्रके राजा फरोहाने उसके रास्तेमें बहुत बाधाएँ डालीं, पर वह सफल न हो सका। मूसाकी विजय हुई। राजाने यहूदियोंके मिस्रसे चले जानेकी बात मंजूर कर ली।

मूसाने रक्तकी एक बूँद भी बिना बहाये क्रान्ति कर डाली। पैंतीस लाख लोगोंको लेकर वह मिस्रसे फिलस्तीनके लिए चल पड़ा। रास्तेमें भी अनेक मुसीबतें आयीं, पर ईश्वरका सहारा था। मूसाको अपने उद्देश्यमें सफलता मिली।

दस पवित्र आदेश

मिस्रसे चलनेके ३ महीने बाद मूसाने सिनाइ पर्वतके सामने छावनी डाली। उस पर्वतपर उसे यहोवाकी पवित्र वाणी सुनाई पड़ी और १० पवित्र आदेश मिले। इन आदेशोंमें दस बातें हैं। ये बातें ही यहूदी धर्मका मूल आधार हैं।

इनमें कहा गया है कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसीकी पूजा करो। दूसरेकी नहीं। व्यर्थ उसका नाम मत लो। छह दिन काम करो, सातवें दिन विश्राम।

माता-पिताका आदर करो। न हत्या करो, न व्यभिचार। न चोरी करो, न झूठी गवाही दो। किसीकी सम्पत्तिका, स्त्रीका, दास-दासीका, गाय-बैल, भेड़-बकरी आदिका लालच मत करो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूसाकी व्यवस्था

मूसाने यहोवाके आदेशोंके अनुसार दण्डसंहिता और व्यवस्था तैयार की। राष्ट्रके लिए विधान बना दिया।

इसके बाद मूसाने लड़ाईमें जाने लायक जवानोंकी गिनती करायी। छह लाखसे अधिक ऐसे जवान निकले। फिर उसने नाकेबन्दीका प्रबन्ध किया।

युद्ध करते-करते मूसा आगे बढ़ता गया। मिद्दियानियोंपर मूसाने विजय प्राप्त की। कनान देशकी सीमा बनायी। बाहर छह शरणार्थी नगर बसानेका आदेश दिया। चालीस वर्षतक यह युद्ध चलता रहा।

अन्तिम उपदेश

पुरानी बाइबिलमें मूसाके उपदेश भरे पड़े हैं। एक सौ बीस वर्षका होनेपर मूसाका देहान्त हुआ। उसने सबको आशीर्वाद देते हुए बिदा ली। कहा :

"मैं यहोवाके नामका प्रकाश करता हूँ। वह परमेश्वर महान् है। पूर्ण है। न्यायी है। सत्य है। वही तुम्हारा पिता है। उसीने तुम्हें बनाया है। वह न्याय करेगा। दासोंपर करुणा करेगा। उसका सानी कोई नहीं। वही मारता है, वही जिलाता है। वह अनन्त है। उसीको पूजो। आमीन !"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: ३ :

परमेश्वर यहोवा : १ :

मूसाने इजराइलकी जनताके आगे यहोवाका गीत गाया[१] :
हे आकाश, हे पृथिवी, कान लगाकर मेरी बातें सुन।
मैं तो 'यहोवा' नामका प्रचार करूँगा।
तुम अपने परमेश्वरकी महिमाको मानो।
वह चट्टान है। उसका काम खरा है।
उसकी सारी गति न्यायकी है।
वह सच्चा ईश्वर है।
उसमें कुटिलता नहीं।
वह धर्मात्मा है, सीधा है।[२]

---

१. व्यवस्था विवरण ३१।३०। २. वही, ३२।१–४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डर मत, यहोवा तेरे साथ है

तू डर मत । साहस रख । दृढ़ हो । किसीसे भयभीत न हो, क्योंकि तेरे संग चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है । वह न तो कभी तुझे धोखा देगा, न कभी तेरा साथ छोड़ेगा ।[१]

परमेश्वरको भूल मत

जब तू खा-पीकर तृप्त हो, अच्छे-अच्छे मकान बनवाकर उनमें रहने लगे, तेरी गायों, तेरे बैलों, तेरी भेड़-बकरियोंकी बढ़ती हो, तेरा सोना-चाँदी, रुपया-पैसा और सब तरहका धन खूब बढ़ जाय, तब कहीं ऐसा न हो कि तेरे मनमें अहंकार समा जाय और तू अपने परमेश्वर यहोवाको भूल जाय ।[२]

दस आज्ञाएँ : २ :

परमेश्वरने कहा :

१. मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ ।

२. तू मुझे —यहोवाको—छोड़कर दूसरे और किसीको ईश्वर मत मान । न तो तू किसी मूर्तिकी पूजा कर और न और ही किसीकी ।

३. अपने परमेश्वरका, यहोवाका नाम व्यर्थके लिए, किसी स्वार्थके लिए न ले ।

४. सप्ताहमें ६ दिन तू काम कर, सातवें दिन विश्राम । विश्रामके दिनको पवित्र मान । उस दिन तू किसी तरहका काम-

---

१. व्यवस्था विवरण ३१।६ । २. वही, ८।१२–१४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काज न कर। न तेरे बेटा-बेटी, न तेरे दास-दासी, न तेरे पशु-चौपाये और न तेरे घरमें आये परदेशी ही कोई काम-काज करें।

५. तू अपने माता-पिताका आदर-सम्मान कर।

६. तू किसीकी हत्या न कर।

७. तू व्यभिचार न कर।

८. तू चोरी न कर।

९. तू झूठी गवाही न दे।

१०. तू न तो किसीके मकानका लालच कर, न किसीकी स्त्रीका। न किसीके दास या दासीका लालच कर, न किसीके बैल या गदहेका।[१]

सबपर प्रेम और दया : ३ :

अपने मनमें किसीके प्रति वैरका, दुश्मनीका भाव मत रखो।[२]

परदेशीसे भी प्रेम

कोई परदेशी तुम्हारे संग रहे, तो उसे दुःख न देना। साथमें जो परदेशी रहे, उसे तुम देशीके समान ही मानो। उससे अपने ही समान प्रेम करो।[३]

मकानकी मुँडेर

जब तू नया घर बनाये, तब उसकी छतपर आड़के लिए

---

१. निर्गमन २०।१–१७। २. लैव्य-व्यवस्था १९।१७। ३. वही, १९।३३-३४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुँडेर जरूर बनाना । ऐसा न हो कि कोई छतपर चढ़े और मुँडेर न होनेसे वह नीचे गिर पड़े और तेरे घरपर खूनका दोष लगे ।[1]

घायलकी हानि भर दे

यदि कुछ लोग आपसमें झगड़ें और एक-दूसरेपर पत्थर या मुक्का चलायें, जिससे कोई मरे तो नहीं, पर बिस्तरपर पड़ जाय, तो जब वह उठकर लाठीके सहारे बाहर चलने-फिरने लगे और मारनेवाला निर्दोष ठहरे, तब उस आदमीको चाहिए कि वह दूसरेके पड़े रहनेकी हानि तो भर ही दे, उसे भला-चंगा भी करा दे ।[2]

गर्भिणीको मत सता

यदि मनुष्य आपसमें मारपीट करके किसी गर्भिणी स्त्रीको ऐसी चोट पहुँचाये कि उसका गर्भ गिर जाय, परन्तु और कुछ

हानि न हो, तो मारनेवालेसे उतना दण्ड लिया जाय, जितना उस स्त्रीका पति पंचकी सम्मतिसे ठहराये ।

परन्तु यदि उसे और कुछ हानि पहुँचे, तो प्राणकी सन्ती प्राणका, आँखकी सन्ती आँखका, दाँतकी सन्ती दाँतका, हाथकी सन्ती

---

१. व्यवस्था विवरण २२।८। २. निर्गमन २१।१८-१९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हाथका, पाँवकी सन्ती पाँवका, दागकी सन्ती दागका, घावकी सन्ती घावका और मारकी सन्ती मारका दण्ड हो।[1]

पक्षियोंपर दया कर

यदि वृक्ष या भूमिपर तेरे सामने रास्तेमें किसी चिड़ियाका घोंसला मिले, चाहे उसमें बच्चे हों चाहे अण्डे, और उन बच्चों या अण्डोंपर उनकी माँ बैठी हुई हो, तो बच्चों समेत माँको मत लेना।[2]

पशुओंपर दया

यदि तेरे शत्रुका बैल या गदहा भटकता हुआ तुझे मिले, तो उसे अवश्य उसके पास लौटा आना।

यदि तू अपने वैरीके गदहेको बोझके मारे दबा हुआ देखे,

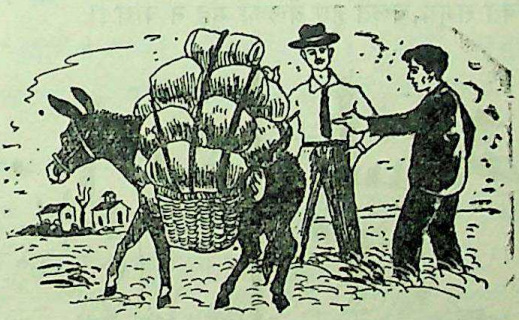

तो, चाहे उसे उस स्वामीके कारण छुड़ानेको तेरा मन न चाहे, तो भी उसे अवश्य छुड़ा लेना।[3]

---

१. निर्गमन २१।२२–२५। २. व्यवस्था विवरण २२।६।
३. निर्गमन २३।४-५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसका माल हो, उसे लौटा दे

तू अपने भाईके गाय-बैल या भेड़-बकरीको भटकी हुई देखकर अनदेखी न करना। उसे अवश्य उसके पास पहुँचा देना। यदि वह दूर हो, तो वह जब ढूँढ़ने आये, तब उसे दे देना।

किसीका गदहा हो या कपड़ा, खोयी हुई कोई भी चीज क्यों न हो, उसके बारेमें ऐसा ही करना। तुझे मिले, तो देखी-अनदेखी न करके उसे वापस लौटा देना।

किसीके चौपायेको—गाय, बैल, गदहेको—राहमें गिरा देखना, तो देखी-अनदेखी न करना। उसे उठानेमें अवश्य उसकी मदद करना।[१]

बैलका मुँह न बाँध

दाँवते समय चलते हुए बैलका मुँह न बाँध।[२]

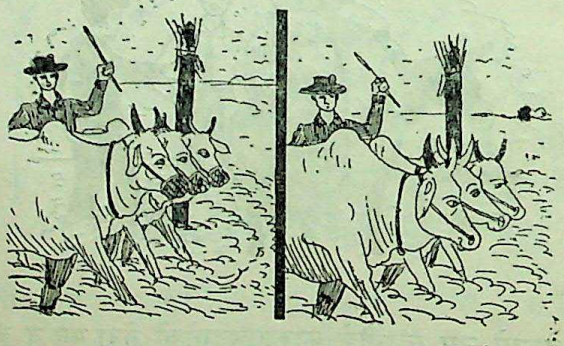

१. व्यवस्था विवरण २२।१–४। २. वही, २५।४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवित्र बनो : पवित्र रहो : ४ :

तुम अपने-आपको पवित्र करो और पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला परमेश्वर यहोवा हूँ ।[१]

अन्याय न कर

एक-दूसरेपर न तो अंधेर करना, न एक-दूसरेको लूट लेना ।[२]
मजदूरकी मजदूरी तेरे पास दूसरे दिन सबेरे तक न रहने पाये ।[३]

बड़ोंका आदर कर

पके बालवालेके सामने उठ खड़े होना । बूढ़ोंका, बुजुर्गोंका आदर-मान करना और परमेश्वरका भय निरन्तर मानना ।[४]

दुखियोंको न सता

बहिरेको शाप न देना । अन्धेके आगे ठोकर लगनेका सामान मत रखना । अपने परमेश्वरका भय मानना ।[५]

ब्रह्मचारी रह

न तो परायी स्त्रीके साथ व्यभिचार कर और न अपनी किसी नजदीकी रिश्तेदारके साथ ऐसा घिनौना काम कर ।[६]

---

१. लैव्य-व्यवस्था २०।७-८ । २. वही, १९।१३ । ३. वही, १९।१३ । ४. वही, १९।३२ । ५. वही, १९।१४ । ६. वही, २०।१०–२१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पापकी कमाई न खा

न तो कोई स्त्री कुकर्म करे और न कोई पुरुष। न तो वेश्या-पनकी कमाई अपने घर लाना, न कुत्तेकी कमाई। यहोवाकी दृष्टिमें ये दोनों कमाई घृणित हैं।[१]

सही बोलो, सही तौलो : ५ :

झूठी बात न फैलाना। अन्यायभरी गवाही देकर दुष्टका साथ न देना। बुराई करनेके लिए न तो बहुतोंके पीछे हो लेना और न उनके पीछे चलकर मुकदमेमें न्याय बिगाड़नेको गवाही देना।[२]

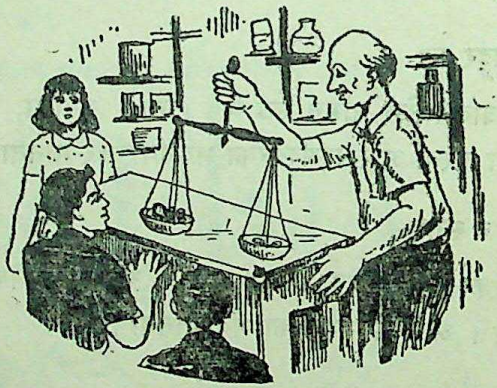

झूठे मुकदमेसे दूर रहना। निर्दोष और धर्मात्मा आदमीको मत सताना।[३]

---

१. व्यवस्था विवरण २३।१७-१८। २. निर्गमन २३।१-२। ३. वही, २३।७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सही तौल

अपनी थैलीमें भाँति-भाँतिके घटती-बढ़ती बटखरे न रखना। अपने घरमें भाँति-भाँतिके, घटती-बढ़ती नपुए न रखना। तेरे बटखरे और नपुए पूरे-पूरे और धर्मके हों।

ऐसे कामोंमें जो लोग कुटिलता बरतते हैं, वे सब परमेश्वर यहोवाकी दृष्टिमें घृणित हैं।[१]

कपट न कर

न्यायमें, परिमाणमें, तौलमें और नापमें कुटिलता न करना। सच्चा तराजू, धर्मके बटखरे, सच्चा नपुआ और धर्मकी तौल तुम्हारे पास रहे।[२]

तुम न तो चोरी करना, न एक-दूसरेसे कपट करना और न झूठ बोलना।[३]

---

१. व्यवस्था विवरण २५।१३–१६। २. लैव्य-व्यवस्था १९।३५-३६।
३. वही, १९।११

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रिश्वत लेना गलत : ६ :

घूस मत लेना, क्योंकि घूस देखनेवालोंको अंधा कर देती है और धर्मात्माओंकी बातें पलट देती है।[१]

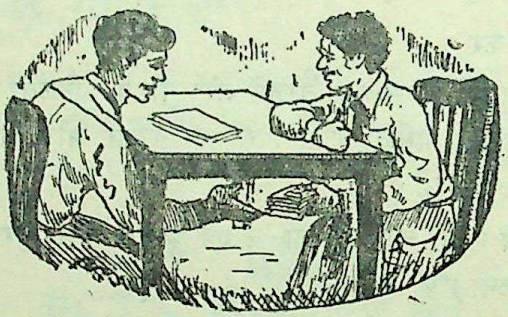

दासको मुक्त करो : ७ :

तुम यदि कोई दास मोल लो, तो वह ६ वर्षतक सेवा करे। सातवें वर्ष वह स्वतंत्र होकर सेंतमेंत चला जाय।[२]

यदि वह अकेला आया हो तो अकेला ही जाय, पत्नीके साथ आया हो तो पत्नीके साथ जाय।

छूछे हाथ न जाने दे

जब तू अपने दासको स्वतन्त्र करे, तब उसे छूछे हाथ न जाने देना। अपनी भेड़-बकरियों, खलिहान और दाखमधुके कुंडमेंसे

---

१. निर्गमन २३।८। २. वही, २१।२-३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसे बहुतायतके साथ देना । तेरे परमेश्वर यहोवाने तुझपर जैसी कृपा की हो, जैसी आशीष दी हो, उसीके अनुसार उसे देना ।[१]

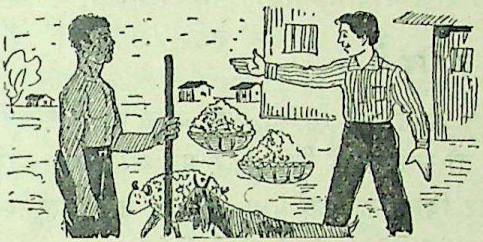

पिरथी परमेसुरकी सारी : ८ :

यहोवाने कहा : समस्त पृथ्वी मेरी है ।[२]

जमीनको परती छोड़

छह सालतक तो अपनी जमीनमें बोना और उसकी उपज इकट्ठी करना, परन्तु सातवें साल उसे परती पड़ी रहने देना ।

उपजमें गरीबोंका भाग

उस जमीनको वैसा ही पड़े रहने देना, तो तेरे गरीब भाई-

१. व्यवस्था विवरण १५।१४ । २. निगमन १९।३–५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बन्धु उससे खाने पायें। उनसे भी जो कुछ बच जाय, वह जंगली पशुओंके खानेके काममें आये।

अपनी दाख और जलपाईकी बारियोंको भी ऐसे ही करना।[१]

दाना-दाना न तोड़ ले

जब तू अपने पके खेतको काटे और भूलसे खेतमें एक पूला छूट जाय, तो उसे लेनेके लिए फिर मत लौट जा। उसे परदेशी, अनाथ और विधवाके लिए पड़ा रहने दे, ताकि परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामोंमें तुझे आशीर्वाद दे।

जब तू जलपाईके अपने वृक्षको हिलाये, तब डालियोंको दूसरी दफा न हिला। परदेशी, अनाथ और विधवाके लिए उसे रहने दे।

जब तू दाखकी अपनी बारीके फल तोड़े, तो उसका दाना-दाना न तोड़ ले। परदेशी, अनाथ और विधवाके लिए रहने दे।[२]

दशमांश यहोवाका

भूमिकी उपजका दसवाँ हिस्सा, चाहे वह भूमिका बीज हो, चाहे वृक्षका फल, यहोवाका ही है। वह यहोवाके लिए पवित्र ठहरे।[३]

भूमि बेची न जाय

भूमि सदाके लिए बेची न जाय, क्योंकि वह परमेश्वरकी है।[४]

---

१. निर्गमन २३।१०-११। २. व्यवस्था विवरण २४।१९–२१।
३. लैव्य-व्यवस्था २७।३०। ४. वही, २५।२३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जमीन जिसकी हो, उसे दो : ९ :

छह वर्ष अपना-अपना खेत बोया करना और छहों वर्ष अपनी-अपनी दाखकी बारी छाँटकर देशकी उपज इकट्ठी करना।

सातवें वर्ष भूमिको यहोवाके लिए परम विश्राम-काल मिले। उसमें न तो अपना खेत बोना, न अपनी दाखकी बारी छाँटना। कटे हुए खेतमें अपने-आप जो कुछ उगे, उसे न काटना।

भूमिके विश्राम-कालकी ही उपजसे तुम्हें, तुम्हारे दास-दासी-को और तुम्हारे साथ रहनेवाले मजदूरों और परदेशियोंको भी भोजन मिलेगा। तुम्हारे पशुओं और देशके सभी जीव-जन्तुओंका भोजन भूमिकी उपजसे होगा।

पचासवाँ वर्ष—पर्व

सात विश्राम-वर्ष होनेके बाद पचासवाँ वर्ष आये, तो उसे पवित्र मानना।

देशके सारे निवासियोंके लिए छुटकारेका प्रचार करना। वह वर्ष तुम्हारे यहाँ 'जुबली'का वर्ष कहलाये।

उसमें तुम अपनी-अपनी निजी भूमि और अपने घरानोंमें लौटने पाओगे। इस वर्ष तुम खेतोंमें कुछ मत बोना और अपने-आप जो उगे, उसे काटना भी मत। बिना छटी दाख-लताओंको भी मत तोड़ना।

भूमि बेची न जाय। बेची हुई भूमि जुबलीके वर्षतक मोल लेनेवालोंके हाथमें रहे। जुबलीके वर्षमें वह छूट जाय और तब वह मनुष्य अपनी भूमिका फिर अधिकारी हो जाय।[१]

---

१. लैव्य-व्यवस्था २५।३–२८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

न ब्याज लो, न मुनाफा : १० :

यदि तू अपने पास रहनेवाले किसी गरीबको रुपये उधार दे, तो उससे महाजनकी तरह ब्याज न ले।

यदि तू कभी अपने भाई-बन्धुके कपड़े बन्धक रख भी ले, तो सूर्य डूबनेके पहले उन्हें लौटा दे। उसके पास ओढ़नेका वही अकेला कपड़ा होगा, तो वह क्या ओढ़कर रातको सोयेगा ? वह मेरी दुहाई देगा, तब मैं उसकी सुनूँगा, क्योंकि मैं करुणामय हूँ।[१]

यदि तेरा कोई भाई-बन्धु कंगाल हो जाय और उसकी दशा तरस करने लायक हो जाय, तो तू उसको सँभाल। उससे न तो ब्याज लेना, न मुनाफा। अपने परमेश्वरका भय मानना, जिससे तेरा भाई-बन्धु तेरे साथ जीवन-निर्वाह कर सके। न तो उसे ब्याजपर रुपया देना और न लाभके लालचसे उसे खाने-पीनेकी चीज देना।[२]

मुट्ठी कड़ी न करो

यदि तेरे भाइयोंमेंसे कोई दरिद्र हो, तो उस दरिद्र भाईके लिए न तो अपना हृदय कठोर कर और न अपनी मुट्ठी कड़ी कर। उसे जिस चीजकी कमी हो, उसे जरूरतभर दे। अपना हाथ ढीला करके दे। ऐसा न हो कि छुटकारेका साल पासमें है, इसलिए तू उसे न दे। तू उसे अवश्य दे और उसे देते समय तेरे मनको बुरा भी नहीं लगना चाहिए। तभी यहोवा तुझे आशीर्वाद देगा।[३]

---

१. निर्गमन २२।२५–२७। २. लैव्य-व्यवस्था २५।३५–३८।
३. व्यवस्था विवरण १५।७–१०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शाप पड़े उसपर

शाप पड़े उसपर, जो अपने पिता-माताको तुच्छ जाने। तब सब लोग कहें 'आमीन'।

शाप पड़े उसपर, जो परदेशी, अनाथ या विधवाका न्याय बिगाड़े। तब सब लोग कहें 'आमीन'।

शाप पड़े उसपर, जो अंधे आदमीको राहसे भटका दे। तब सब लोग कहें 'आमीन'।

शाप पड़े उसपर, जो किसीको छिपकर मारे। तब सब लोग कहें 'आमीन'।

शाप पड़े उसपर, जो निर्दोष आदमीको मार डालनेके लिए धन ले। तब सब लोग कहें 'आमीन'।

शाप पड़े उसपर, जो कुकर्म करे। तब सब लोग कहें 'आमीन'।[१]

---

१. व्यवस्था विवरण २७।१६–२५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: ४ :

दीनदयाल यहोवा : १ :

हे मेरे परमेश्वर यहोवा, हे मेरे पवित्र ईश्वर, क्या तू अनादि-कालसे नहीं है ?

तेरी आँखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराईको देख ही नहीं सकता और उत्पातको देखकर चुप नहीं रह सकता ।[१]

दीनदयाल प्रभु

यहोवा कहता है कि आकाश मेरा सिंहासन है, पृथ्वी मेरे चरणोंकी चौकी । तुम मेरे लिए कैसा भवन बनवाओगे ?

सारी वस्तुएँ मेरे हाथकी बनायी हुई हैं । फिर भी मैं उसीकी ओर दृष्टि करूँगा, जो दीन और खेदित मनका हो और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो ।[२]

---

१. हबक्कूक १।१२-१३ । २. यशायाह ६६।१–३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सत्य मार्गपर चलो : २ :

परमेश्वर यहोवा कहता है कि बस करो, उपद्रव और उत्पातको दूर करो। न्याय और धर्मके काम किया करो।

तुम्हारे पास सच्चा तराजू रहे और सच्चे बटखरे।[1]

अपराधोंको छोड़ो

पश्चात्ताप करो और अपने सब अपराधोंको छोड़ो। तभी तुम्हारा अधर्म तुम्हारे ठोकर खानेका कारण नहीं बनेगा। अपने सब अपराधोंको दूर करो। अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो।[2]

गरीबोंको मत सताओ : ३ :

तुम कंगालोंको लताड़ा करते हो और भेट कहकर उनका अन्न हर लेते हो, इसलिए तुमने गढ़े हुए पत्थरोंसे जो घर बनाये हैं, उनमें रहने न पाओगे। तुम्हारे पाप भारी हैं। तुम धर्मीको सताते और घूस लेते हो। गरीबोंका न्याय बिगाड़ते हो।

हे लोगो, बुराईको नहीं, भलाईको ढूँढ़ो, ताकि तुम जीवित रहो और तुम्हारा यह कहना सच ठहरे कि परमेश्वर यहोवा हमारे साथ है।

बुराईसे बैर और भलाईसे प्रीति रखो। फाटकमें न्यायको स्थिर करो।[3]

---

१. यहेजकेल ४५।९–१२। २. वही, १८।३०-३१। ३. आमोस ५।११–१५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शराब पीनेवालेको ही पी जाती है ! : ४ :

थू है मतवालोंके घमण्डके मुकुटपर ![१]

मदिराके कारण लोग डगमगाते और लड़खड़ाते हैं। याजक और नबी भी मदिराके कारण डगमगाते हैं।

मदिराने उन्हींको पी लिया है !

दर्शन पाते हुए भी लोग भटक जाते हैं और न्यायमें भूल कर बैठते हैं।

सारा भोजन और आसन कय और मैलसे भर जाता है। कोई शुद्ध स्थान नहीं बचता ! जिसका यह हाल हो, वह किसीको क्या ज्ञान सिखायेगा ?[२]

थू है उसपर ! : ५ :

थू है उसपर, जो पराया धन छीनकर धनवान् बन जाता है ! कबतक धनवान् रहेगा वह ?

थू है उसपर, जो अपना घर बन्धककी चीजोंसे भर लेता है ! क्या वे लोग अचानक न उठेंगे, जो तुझसे ब्याज लेंगे ? क्या वे न जागेंगे, जो तुझे संकटमें डालेंगे ? क्या तू उनसे लूटा न जायगा ?

थू है उनपर, जो अन्यायसे अपना घर भर लेना चाहते हैं।

थू है उसपर, जो हत्या कर-करके नगरको बनाता है और दुष्टता कर-करके अपना किला मजबूत करता है।

---

१. यशायाह २८।१। २. वही, २८।७–१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थू है उसपर, जो अपने पड़ोसीको शराब पिलाता है और उसमें विष घोलकर उसे मतवाला कर देता है, ताकि वह उसे नंगा देखे ।[1]

थू है उनपर, जो बिछौनोंपर पड़े-पड़े बुराइयोंके उपायकी कल्पना करते हैं और दुष्ट कर्मका षड्यंत्र रचते हैं तथा बलशाली होनेके कारण, भोर होनेके पहले ही उसे पूरा कर डालते हैं ।

वे खेतोंका लालच करके उन्हें छीन लेते हैं, घरोंका लालच करके उन्हें भी ले लेते हैं और उन घरवालोंपर अंधेर और अत्याचार करते हैं ।

यहोवा कहता है कि मैं ऐसे लोगोंपर ऐसी विपत्ति डालूँगा, जिससे वे अपनी गर्दन नहीं छुड़ा सकेंगे ।[2]

परमेश्वर हमसे क्यों दूर है ? : ६ :

यहोवाका हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके । उसका कान ऐसा भारी नहीं हो गया कि सुन न सके । परन्तु तुम्हारे अधर्मके कामोंने तुम्हें तुम्हारे परमेश्वरसे अलग कर दिया है और तुम्हारे पापोंके कारण उसका मुँह तुमसे ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता ।

कारण यह है कि तुम्हारी उँगलियाँ हत्या और अधर्मके कामोंसे अपवित्र हो गयी हैं । तुम्हारे मुँहसे झूठे वचन निकलते हैं। तुम्हारी जीभसे दुष्ट बातें निकलती हैं ।

कोई आदमी धर्मके साथ नालिश नहीं करता । कोई सचाई-से मुकदमा नहीं लड़ता । लोग झूठपर भरोसा रखते हैं और फालतू-

---

१. हबक्कूक २।६–१५ । २. मीका २।१–४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की बातें बकते रहते हैं। वे उत्पात करते हैं। अनर्थको जन्म देते हैं। वे साँपिनके अण्डे सेते हैं और मकड़ीके जाले बनाते हैं। ये जाले कपड़ेका काम न देंगे।

वे उपद्रवके काम करते हैं। बुराई करनेको दौड़ते हैं। निर्दोष-की हत्या करनेपर उतारू रहते हैं। उनकी बातें ठीक नहीं। वे विनाशके रास्तेपर हैं। शान्तिका मार्ग वे नहीं जानते।

हमारे पाप हमारे संग हैं। हमने यहोवाका अपराध किया है। हमने परमेश्वरके पीछे चलना छोड़ दिया है और अंधेर करने लगे। झूठी बातें कहने-करने लगे। इससे न्याय हट गया, धर्म दूर खड़ा रह गया, सचाई बाजारसे खो गयी।[१]

धर्मात्मा कौन है ? : ७ :

धर्मात्मा वह है, जो न्याय और धर्मके काम करे।

धर्मात्मा वह है, जो परायी स्त्रीको न बिगाड़े। जो किसी-पर अन्धेर न करे। जो ऋणीको उसका बंधक फेर दे। जो किसीको लूटे नहीं, बल्कि भूखेको रोटी देता हो, नंगेको कपड़ा ओढ़ाता हो। जो न तो ब्याजपर रुपया देता हो, न रुपयेका मुनाफा लेता हो।

धर्मात्मा वह है, जिसने दुष्ट कामोंसे अपना हाथ खींच लिया हो। सचाईसे न्याय किया हो।

जो यहोवाकी विधिपर चलता हो, यहोवाके नियमोंका पालन करता हो। जो सच्चा हो, सच्चे काम करता हो, वही धर्मात्मा है।[२]

---

१. यशायाह ५९।१–१५। २. यहेजकेल १८।५–९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: ५ :

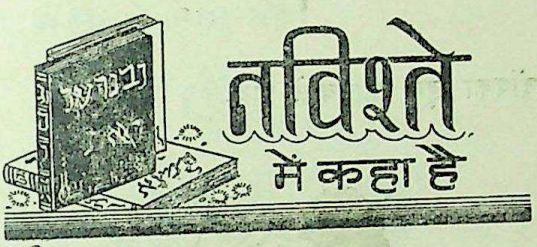

यहोवाको नापसन्द बातें : १ :

छह बातोंसे यहोवा वैर रखता है,
छह क्यों, सात बातें हैं, जिनसे उसे घृणा है—
घमण्डसे चढ़ी हुई आँखें,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

झूठ बोलनेवाली जीभ,

निर्दोषका खून बहानेवाले हाथ,

अनर्थ कल्पनाएँ करनेवाला मन,

CC-0. Agamnigam Digitized by eGangotri Foundation, Chandigarh

बुराईकी ओर दौड़नेवाले पैर,

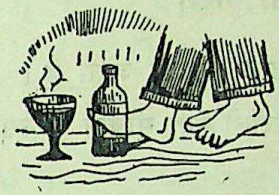

झूठ बोलनेवाला गवाह और

भाई-भाईके बीच फूट डालनेवाला आदमी[१]

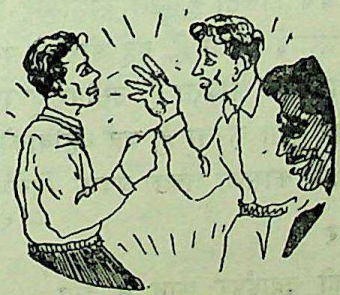

---

१. नीतिवचन ६।१६–१९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उदार प्राणी हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

जो आदमी दूसरोंकी खेती सींचता है, उसकी भी खेती सींची जायगी।

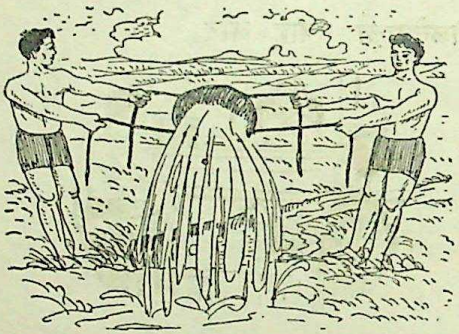

जो अपना अनाज रख छोड़ता है, उसे लोग शाप देते हैं।
जो अनाज बेच डालता है, उसे आशीर्वाद मिलता है।
जो यत्नसे भलाई करता है, वह औरोंकी प्रसन्नता पाता है।
जो दूसरोंकी बुराई खोजता है, उसीपर बुराई आ पड़ती है।[१]
जो कंगालपर कृपा करता है, वह यहोवाको उधार देता है।
उसे अपने इस कामका अच्छा बदला मिलेगा।[२]

कंगालकी मदद कर

जो कंगालकी दुहाईपर कान न देगा,

---

१. नीतिवचन ११।२५—२७। २. वही, १९।१७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जायगी ।[1]
तुझमें शक्ति हो, तो भला करनेसे न चूकना ।
जब तेरे पास देनेको कुछ हो,
तो पड़ोसीसें न कहना कि जा, कल फिर आना, कल मैं तुझे दूँगा ।
जब तेरा पड़ोसी तेरे पास बेखटके रहता है,
तब उसके विरुद्ध बुरी युक्ति न बाँधना ।
उपद्रवी पुरुषके विषयमें डाह न करना,
न उसकी-सी चाल चलना,
क्योंकि यहोवा दुष्टोंसे घृणा करता है ।[2]

भूखे वैरीको खिला : प्यासेको पिला

यदि तेरा वैरी भूखा हो, तो उसको रोटी खिलाना ।
यदि वह प्यासा हो, तो उसे पानी पिलाना ।
क्योंकि इस तरह तू उसके सिरपर अंगारे डालेगा ।
यहोवा तुझे इसका फल देगा ।[3]

अंगूरी हाला डस लेती है : ३ :

हाय, कौन फँसते हैं झगड़े-रगड़ेमें ?
कौन बकबक करता है ?
किसे अकारण घाव लगते हैं ?
किसकी आँखें लाल हो जाती हैं ?
उनकी, जो दाख-मधु देरतक पीते हैं ।

---

१. नीतिवचन २१।१३ । २. वही, ३।२७–३२ । ३. वही, २५।२१-२२

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब दाख-मधु लाल दिखायी देता है,

और कटोरेमें उसका सुन्दर रंग होता है,
और जब वह धारके साथ उँड़ेला जाता है,
तब उसे मत देखना,
क्योंकि अन्तमें वह सर्पकी नाईं डसता है और करैतकी तरह काटता है ![१]

पेटू मत बन : ४ :

जब तू किसी हाकिमके साथ भोजन करने बैठे,
तब इस बातको मन लगाकर सोचना कि मेरे सामने कौन है ?
और यदि तू पेटू हो,
तो थोड़ा खाकर भूखा उठ जाना।
उसके स्वादिष्ट व्यंजनोंकी लालसा न करना,
क्योंकि वह धोखेका भोजन है।
जो डाहसे देखता है, उसकी रोटी न खाना;

---

१. नीतिवचन २४।२९–३२

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और न उसके स्वादिष्ट व्यंजनोंकी लालसा करना।
वह तुझसे कहता तो है कि खा, पी,

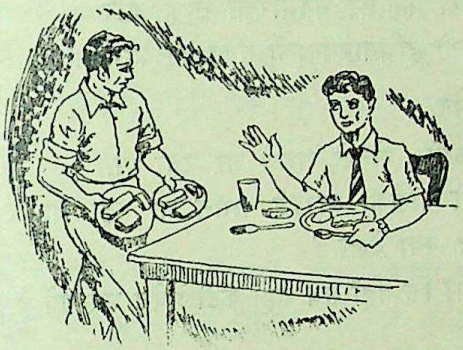

पर उसका मन तुझसे लगा नहीं।
जो कौर तूने खाया है, उसे उगलना पड़ेगा।[१]

आलस छोड़, मेहनत कर : ५ :

हे आलसी, चींटियोंके पास जा,
उनके कामपर ध्यान दे और बुद्धिमान् बन।
उनका न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान
और न उनपर कोई प्रभुता करनेवाला होता है।
तो भी वे धूपकालमें अपना आहार संचित करती हैं।
कटनीके दिनोंमें अपना खाद्य बटोरती हैं।
हे आलसी, तू कबतक सोता रहेगा ?
तेरी नींद कब टूटेगी ?
कुछ और सो ले,

१. नीतिवचन २३।१–८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थोड़ी-सी नींद, एक और झपकी !
कुछ देर और छातीपर हाथ धरे लेटा रह ।
तब तेरी कंगाली बटमारकी तरह और
तेरी घटी हथियारबन्दकी तरह आ पड़ेगी ।[१]

आलसीका खेत

मैं आलसीके खेतके पाससे जा रहा था,
मूरखकी दाखकी बारीके पाससे जा रहा था,
तो मैंने क्या देखा ?
मैंने देखा कि वहाँ सब कहीं कँटीले पेड़ भर गये हैं ।

और वह बिच्छू पेड़ोंसे ढँप गयी है,
और उसके पत्थरका बाड़ा गिर गया है ।
तब मैंने देखा और उसपर ध्यानसे सोचा ।
हाँ, मैंने देखकर सीख ली :
छोटी-सी नींद—एक और झपकी !
थोड़ी देर हाथपर हाथ धरकर बैठना और लेटे रहना,
तब तेरी कंगाली डाकूकी तरह और
तेरी घटी हथियारबन्दकी तरह आ पड़ेगी ।[२]

---

१. नीतिवचन ६।६–११ । २. वही, २४।३०–३४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रम करो : लालच नहीं

जो काममें ढिलाई करता है, वह निर्धन हो जाता है।
कामकाजी लोग अपने हाथोंसे धनी होते हैं।
जो बेटा धूपकालमें बटोरता है, वह बुद्धिमान् है।
जो बेटा कटनीके समय सोता है, वह लज्जाका कारण होता है।[१]

रुपयेकी प्रीति

जो रुपयेसे प्रीति रखे, वह रुपयेसे तृप्त न होगा।
जो बहुत धनसे प्रीति रखे, उसको कुछ फल न होगा। वह भी व्यर्थ है। सम्पत्ति बढ़ती है, तो खानेवाले भी बढ़ते हैं।
मेहनत करनेवाला चाहे कम खाये चाहे ज्यादा, उसे सुखकी नींद आती है। धनीको धन बढ़नेके कारण नींद ही नहीं आती।[२]

मन शुद्ध कर : ६ :

यदि तू अपना मन शुद्ध करे,
ईश्वरकी ओर अपने हाथ फैलाये :
अनर्थका जो कोई काम तुझसे होता हो, उसे रोके, दूर करे,
अपने डेरोंमें कोई दुष्टता न रहने दे,
तब तू निश्चय ही अपने मुखका कलंक मिटा सकेगा और तू स्थिर होकर कभी न डरेगा।[३]

---

१. नीतिवचन १०।४-५। २. सभोपदेशक ५।१०–१२। ३. अय्यूब ११।१३–१५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मन भटक जाय तो···

यदि मेरे पाँव सही मार्गसे बहक गये हों,
मेरा मन मेरी आँखोंकी देखी चाल चला हो,
या मेरे हाथोंमें कुछ कलंक लगा हो,
तो मैं जो बीज बोऊँ, उसे दूसरा खाये।
मेरे खेतकी उपज उखाड़ डाली जाय,
यदि मेरा हृदय किसी स्त्रीपर मोहित हो गया है,
और मैं पड़ोसीके दरवाजे घात लगाये बैठा हूँ,
तो मेरी स्त्री दूसरेके लिए पीसे
और पराये पुरुष उसे भ्रष्ट करें,
क्योंकि वह तो महापाप होता
और न्यायियोंसे दण्ड पाने लायक अधर्मका काम होता।[1]

मनकी रक्षा कर

सबसे अधिक अपने मनकी रक्षा कर,
क्योंकि जीवनका मूल स्रोत वही है।
टेढ़ी बात अपने मुँहसे मत बोल,
चालबाजीकी बातें कहना छोड़,
तेरी आँखें सामनेकी ही ओर लगें,
तेरी पलकें आगेकी ओर ही खुलें।
अपने पाँव धरनेके लिए रास्तेको चौरस कर,
तेरे सब रास्ते ठीक रहें।
न तो तू दाहिनी ओर मुड़, न बायीं ओर,
अपने पाँवको बुराईके रास्तेसे हटा ले।[2]

---

१. अय्यूब ३१।७–११। २. नीतिवचन ४।२३–२७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

झगड़ा बढ़ने ही न दे : ७ :

दूधके मथनेसे जैसे मक्खन निकलता है,
नाकके मरोड़नेसे लोहू निकलता है,
वैसे ही क्रोधके भड़कनेसे झगड़ा उत्पन्न होता है।[१]

पहले ही रोक दे

जो दूसरोंका अपराध ढँकता है, वह प्रेमका खोजी ठहरता है।

जो किसी बातकी चर्चा बार-बार करता है, वह मित्रोंमें भी फूट करा देता है।

बुरा मनुष्य दंगेका यत्न करता है।
जो कोई भलाईके बदले बुराई करे,
उसके घरसे बुराई दूर न होगी।

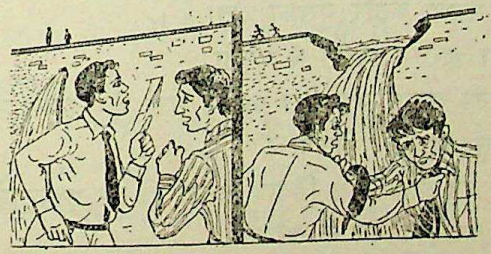

झगड़ेका आरम्भ बाँधके छेदके समान है।
झगड़ा बढ़नेसे पहले उसे छोड़ देना उचित है।
जो दोषीको निर्दोष और जो निर्दोषको दोषी ठहराता है,

---

१. नीतिवचन ३०।३३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन दोनोंसे यहोवा घृणा करता है ।[१]
वैरसे झगड़े उत्पन्न होते हैं,
परन्तु प्रेमसे सब अपराध ढँप जाते हैं ।[२]
झगड़े-रगड़े केवल अहंकारसे ही होते हैं ।[३]
कोमल उत्तर सुननेसे जलजलाहट ठण्डी होती है,
परन्तु कटु वचनसे क्रोध भड़क उठता है ।[४]
देरसे क्रोध करना, वीरतासे मनको वशमें करना, नगर जीतनेसे भी उत्तम है ।[५]

बोल तो बोल अमोल है : ८ :

जीभके वशमें जीवन भी है, मृत्यु भी ।
जो उसे काममें लाना जानता है, उसे उसका फल मिलेगा ।[६]
जो अपने मुँहको वशमें रखता है,
वह अपने प्राणको विपत्तियोंसे बचाता है ।[७]
दुष्ट मनुष्य कठोर मुखका होता है ।[८]
झगड़ा करनेमें जल्दी न करना,
नहीं तो अन्तमें जब तेरा पड़ोसी तेरा मुँह काला करे,
तब तू क्या कर सकेगा ?
अपने पड़ोसीके साथ विवाद करना हो तो एकान्तमें करना,
और परायेका भेद न खोलना,
ऐसा न हो कि सुननेवाला तेरी भी निन्दा करे,
और तेरा अपवाद बना रहे ।

---

१. नीतिवचन १७।१३–१५ । २. वही, १०।१२ । ३. वही, १३।१० । ४. वही, १५।१-२ । ५. वही, १६।३२ । ६. वही, १८।२१ । ७. वही, २२।२३ । ८. वही, २२।२९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे चाँदीकी टोकरियोंमें सुनहले सेव हों,
ऐसा होता है मौकेपर कहा हुआ वचन ।[१]

विषय-वासनासे बच : ९ :

परायी स्त्रीकी सुन्दरता देखकर अपने मनमें उसकी अभिलाषा न कर ।

कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे अपने कटाक्षोंमें फँसा ले ।

वेश्या-गमनसे मनुष्य टुकड़े-टुकड़ेका मोहताज हो जाता है ।

कोई छातीपर आग रख ले और कपड़े न जलें—ऐसा कैसे होगा ?

अंगारेपर चले और पैर न झुलसें ?
जो परायी स्त्रीके पास जाता है, वह निरा मूर्ख है,
वह अपने प्राणोंका नाश करता है ।
उसे घायल और अपमानित होना पड़ेगा ।
उसकी बदनामी कभी न मिटेगी ।[२]

कसाईखानेका बैल

मैंने एक दिन अपने झरोखेसे झाँका ।
मैंने एक भोले मूरख जवानको देखा ।
अँधेरा हो गया और उससे एक स्त्री मिली ।
भेष उसका वेश्याका-सा था और वह बड़ी धूर्त थी ।
वह शान्तिरहित और चंचल थी,
अपने घरमें ठहरती नहीं थी ।
कभी सड़कपर रहती थी, कभी चौकमें ।

---

१. नीतिवचन २५।८–११ । २. वही, ६।२४–३३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसने उस जवानको पकड़कर चूमा और बेशर्मीकी बातें कीं,
कहा : 'मैंने अपनी मिन्नतें आज ही पूरी की हैं,
इसीसे मैं तुझसे भेट करनेको निकली ।
मैं तेरे दर्शनकी खोजी थी, सो अभी पाया ।
मैंने अपने पलंगपर मिस्रके बेलबूटेवाले कपड़े बिछाये हैं,
गन्धरस, अगर और दालचीनी छिड़की है,
चल, हम प्रेमसे सुबहतक जी बहलायें ।
मेरा पति घरपर नहीं है, परदेश गया है ।
वह पूर्णमासीको लौटेगा ।'
ऐसी बातें कहकर उसने उसे अपनी मायामें फाँस लिया ।
वह तुरन्त उसके पीछे हो लिया,
जैसे बैल कसाईखानेको,
जैसे बेड़ी पहने कोई कैदी सजा पानेको जाता हो ।

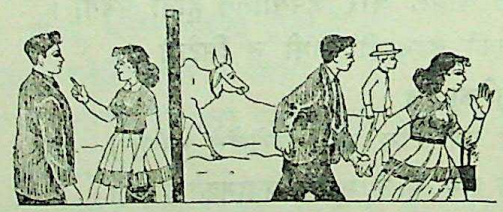

अन्तमें उस जवानका कलेजा तीरसे बेधा जायगा ।
वह उस चिड़ियाकी तरह है,
जो फंदेकी ओर तेजीसे उड़े
पर यह न जाने कि उसमें मेरे प्राण जायेंगे ।[१]

---

१. नीतिवचन ७।६–२३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माता-पिताका आदर कर : १० :

जो पुत्र अपने बापको उजाड़ता है
और अपनी माँको भगा देता है,

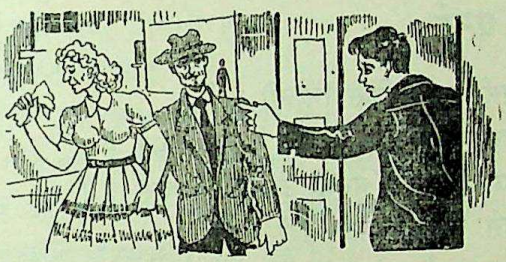

वह अपमान और लज्जाका कारण होगा।[1]

उन्हें कोसो मत

जो अपने माता-पिताको कोसता है,
उसका दिया बुझ जाता है।
चारों ओर घोर अन्धकार छा जाता है।[2]

अनादरका बुरा फल

तीन बातें ऐसी हैं, जो तृप्त नहीं होतीं,
तीन क्यों, चार हैं, जो कभी नहीं कहतीं—'बस!'
अधोलोक और बाँझकी कोख,
भूमि, जो जल पी-पीकर तृप्त नहीं होती,

---

१. नीतिवचन १९।२६। २. वही, २०।२०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आग, जो कभी नहीं कहती–'बस !'
जिस आँखसे कोई अपने पितापर अनादरकी दृष्टि करे,
और मानके साथ अपनी माताकी आज्ञा न माने,
उस आँखको तराईके कौए खोद-खोदकर निकालेंगे और उकावके बच्चे खा डालेंगे ।[१]

भली पत्नी : ११ :

भली पत्नी किसे मिलती है ?
उसका मूल्य मूँगोंसे भी बहुत अधिक है ।
उसके पतिके मनमें उसका विश्वास है ।
उसे लाभकी घटी नहीं होती ।
वह उसके साथ भला व्यवहार करती है ।
वह बड़े तड़के उठ जाती है ।
घरभरको भोजन खिलाती है ।
वह खेत मोल लेती है,
अपनी मेहनतसे दाखकी बारी लगाती है ।
वह कमरको कसकर बाँहोंको मजबूत बनाती है ।
वह लाभदायक व्यापार करती है ।

१. नीतिवचन ३०।१५–१७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रातको उसका दिया नहीं बुझता।
वह अटेरनमें हाथ लगाती है
और चरखा पकड़ती है।
वह गरीबके लिए अपनी मुट्ठी खोलती है,
गरीबके सँभालनेको हाथ बढ़ाती है।
उसके पतिका सभामें सम्मान होता है।
वह बुद्धिकी बात बोलती है।
बिना मेहनतकी रोटी नहीं खाती।
उसके पुत्र उसे 'धन्य-धन्य' कहते हैं।
उसका पति कहता है कि तू स्त्रियोंमें सर्वश्रेष्ठ है।
जो स्त्री यहोवाका भय मानेगी, उसकी प्रशंसा होगी।
उसके हाथोंके परिश्रमका फल उसे दो।
उसके कामोंसे उसकी प्रशंसा होगी।[1]

झगड़ालू पत्नी : १२ :

लम्बे-चौड़े घरमें झगड़ालू पत्नीके संग रहनेसे अच्छा है, छतके कोनेपर रहना।[2]

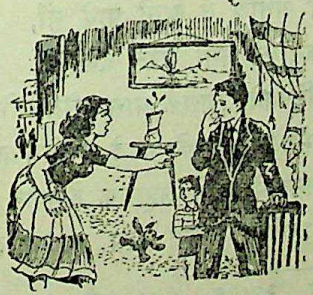

१. नीतिवचन ३१।१०–३१। २. वही, २१।९

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

झगड़ालू और चिढ़नेवाली पत्नीके संग रहनेसे अच्छा है, जंगलमें रहना ।[१]

झड़ीके दिन पानीका लगातार टपकना,
और झगड़ालू पत्नी—दोनों एकसे हैं ।
जो उसे रोक रखे, वह वायुको भी रोक रखेगा ।[२]

कामोंकी कसौटी : १३ :

जब मेरे दास-दासीने मुझसे झगड़ा किया,
तब यदि मैंने उनका हक मार दिया हो,
तो जब ईश्वर उठ खड़ा होगा, तब मैं क्या करूँगा ?
जब वह आयेगा, तब मैं क्या उत्तर दूँगा ?
क्या वहाँ उसका बनानेवाला नहीं, जिसने मुझे बनाया ?
क्या एकने ही हम दोनोंकी सूरत गर्भमें नहीं रची ?[३]

× × ×

यदि मैंने कंगालोंकी इच्छा पूरी न की हो,
या मैंने विधवाके आँसू न पोंछे हों,
या मैंने अपना टुकड़ा अकेला खाया हो,
और उसमेंसे अनाथ न खाने पाये हों,
यदि मैंने किसीको नंगा मरते देखा,
या किसी दरिद्रको, जिसके पास ओढ़नेको न था,
उसे अपनी भेड़ोंकी ऊनके कपड़े न दिये हों,
यदि मैंने फाटकमें अपने सहायक देखकर
अनाथोंके मारनेको अपना हाथ उठाया हो,

---

१. नीतिवचन २२।१९ । २. वही, २७।१५-१६ । ३. अय्यूब ३१।१३–१५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो मेरी बाँह बखौरेसे उखड़कर गिर पड़े
और मेरी भुजाकी हड्डी टूट जाय।[१]

× × ×

यदि मैं अपने वैरीके नाशसे खुश होता,
या उसपर विपत्ति पड़नेपर हँसा होता,
भला होता, मेरा कोई सुननेवाला होता![२]

× × ×

यदि मैंने अपनी जमीनकी उपज बिना मजूरी दिये खायी,
या उसके मालिकका प्राण लिया हो,
तो गेहूँके बदले झरबेरी
और जौके बदले जंगली घास उगें![३]

१. अय्यूब ३१।१६–२२। २. वही, ३१।२९–३५। ३. वही, ३१।३९-४०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: ६ :

यहोवा : दयालु और न्यायी : १ :

परमेश्वर **यहोवा** सबका स्वामी है।

वही **'इलोहिम'** है।

वह न्यायी भी है, दयालु भी।

न्यायी प्रभु ही दयालु है, प्रेममय है। दोनों ही उसके गुण हैं।

संसारका स्वामी

क्या तुम यह कह सकते हो कि इस संसारका कोई स्वामी नहीं है ?[१]

ईश्वर सदा देखता रहता है कि कहाँ क्या हो रहा है ? मनुष्य-के हर कामपर उसकी दृष्टि रहती है। वह संसारका स्वामी सबका न्याय करता है।

---

१. यलकुत शिमेओनी, निर्गमन ३९६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दयालु और क्षमाशील

यहोवा परम दयालु है। उसमें करुणा भरी है। प्रेम भरा है। वह क्षमा करता है।[१]

शक्तिशाली और सर्वव्यापी

वह परम प्रभु 'हगेबुरा' है। वह परम शक्तिशाली है। उसकी शक्तिका, उसकी सामर्थ्यका पार नहीं है।

वह 'शेचीना' है। अन्तर्यामी है। सर्वव्यापी है। हर जगह मौजूद है। ऐसी कोई जगह नहीं, जहाँ वह मौजूद न हो।[२]

वह संसारमें तो सर्वत्र है ही, उसके परे भी है।

सर्वज्ञ

प्रभु **'बाल मचाशवोथ'** है। सब कुछ जानता है। उससे न तो कोई बात छिपायी जा सकती है, न उसे किसी तरहका धोखा दिया जा सकता है।

शाश्वत

प्रभु **'ची हा ओलामीम'** है। शाश्वत है। पहले रहा है। आज भी है। आगे भी रहेगा।

---

१. भजन १३०।७। २. ता० बाबा बाथरा, २५ अ; मिद्राश निर्गमन, रब्बा २।९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ईश्वरीय गुण अपनाओ : २ :

ईश्वरने मनुष्यको अपना 'शुत्ताफ' बनाया है, भागीदार बनाया है, ताकि वह उसकी सृष्टिके उद्देश्यको पूरा कर सके।

प्रभु दयालु है। इसलिए तू भी दयालु बन।

प्रभु उदार है। इसलिए तू भी उदार बन।

प्रभु सत्य और न्यायी है। इसलिए तू भी सत्यशील और न्यायी बन।[१]

मनुष्य है जमीन और आसमानके बीचकी कड़ी। मरणशील शरीर और दैवी आत्माका सम्मेलन।

मृत्युके अवसरपर शरीर धरतीपर पड़ा रह जायगा। आत्मा ईश्वरके पास लौट जायगी।

हिंसा न करो : ३ :

दुष्ट कहा जायगा वह आदमी, जो किसी भाईके खिलाफ हाथ उठाता है, फिर वह भले ही उसे मारे नहीं।[२]

किसी भाईकी रोजीपर हमला न करो। गलत होड़ करके किसीका ग्राहक न छीनो। ऐसा करना उतना ही बुरा है, जितना चोरी करना और डाका डालना।

किसी आदमीके आत्मसम्मानको चोट नहीं पहुँचानी चाहिए।

---

१. सिफरा लैव्य-व्यवस्था १९।२। २. ता० सैनहेद्रिन, ५८ ब

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लोगोंके सामने किसी आदमीको अपमानित करना उतना ही बड़ा पाप है, जितना उसका खून कर देना ।[१]

विदेशियोंकी आत्मसम्मानकी भावनापर भी हमला नहीं करना चाहिए ।

ईमानदारी बरतो : ४ :

व्यापारमें, दूकानदारीमें सदा ईमानदारी बरतो । न दूकानदार धोखा दे, न ग्राहक । दूकानदार न तो किसी चीजका भाव बढ़ाकर ले और न कम तौले । ग्राहकको ठगनेके लिए चीजका रूप न बदले । उसी तरह ग्राहकको दूकानदारकी असुविधाका या उसकी नासमझीका फायदा नहीं उठाना चाहिए ।

जो मजदूर या नौकर काममें ढिलाई करता है, पूरा काम नहीं करता, समयकी पाबन्दी नहीं करता, वह साथियोंके प्रति भी पाप करता है, ईश्वरके प्रति भी ।

मजदूरको पूरी मजदूरी देनी चाहिए । उसकी बेबसीका फायदा नहीं उठाना चाहिए । मजदूरको कमसे कम इतनी मजदूरी तो देनी ही चाहिए, जिससे वह अपने रहन-सहनके स्तरको कायम रख सके ।

---

१. ता० बाबा मेतजिया, ५८ ब

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाणीके दोष छोड़ो : ५ :

'ओनाथ देबारिम' कहते हैं वाणीके दोषोंको। इनकी मनाही है।

किसे क्या कहकर पुकारना चाहिए, इस बातका पक्का पता हुए बिना किसी नामसे पुकारना दोष है।

कोई चीज खरीदनी नहीं है, फिर भी दूकानमें घुसकर चीजोंके दाम पूछना दोष है।

सच बोलो। मनमें जिसके लिए 'हाँ' हो, उसे 'हाँ' कहो। 'ना' हो, तो 'ना' कहो।[१]

'गिनेबाथ दात' कहते हैं सत्यपर पर्दा डालना। किसीके विश्वासका गलत फायदा उठाना। इसकी भी मनाही है।

हम जानते हैं कि फलाँ आदमी हमारा न्योता स्वीकार नहीं करेगा, फिर भी हम उससे कहते हैं कि आप हमारे यहाँ भोजनके लिए अवश्य पधारिये !

हमें किसी मामूली कामके लिए पैसा चाहिए, पर हम यह कहकर उधार माँगते हैं कि हमारे पास खानेको नहीं है।

ये सब हैं **'गिनेबाथ दात'**।

---

१. ता० बाबा मेतजिया, ४९ अ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किसीसे घृणा न करो : ६ :

जो आदमी किसी आदमीसे घृणा करता है, वह सृष्टि रचनेवाले परमेश्वरसे घृणा करता है।[१]

किसी भी आदमीसे घृणा नहीं करनी चाहिए, फिर वह चाहे कोई क्यों न हो।

यदि कोई आदमी चाकूसे अपना एक हाथ काट डालता है, तो क्या वह अपना दूसरा हाथ इसलिए काट डालेगा कि उसने उसका एक हाथ काटा है ?[२]

यदि तुम्हारा शत्रु तुम्हें मारने आये और वह भूखा-प्यासा तुम्हारे घर पहुँचे, तो उसे खाना दो, पानी दो।[३]

हम देखें कि कोई आदमी संकटमें है, डूब रहा है, उसपर डाकू या शेर-चीते आदि हमला कर रहे हैं, तो हमारा कर्तव्य है कि हम

---

१. सिफरे जुता, गिनती १८। २. जे० टी० नेदारिम, ६। ३. नीति २५।२१ पर मिदरास

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी रक्षा करें। यदि ऐसा न कर सकें, तो हमें अपने पैसेसे उसके बचावका प्रबन्ध करना चाहिए।[१]

दान : दया : सत्कर्म : ७ :

दानमेंसे दान दो

हरएक आदमीको दान देना चाहिए। जो आदमी खुद दूसरोंके दानपर जीता हो, उसे भी चाहिए कि वह उन लोगोंको दान दे, जिनकी हालत उससे भी बुरी है।[२]

गरीबोंकी मदद करो। उन्हें ऐसे साधन दो, जिनसे उनकी रोजी चल सके।[३]

दो : मीठे शब्दोंके साथ

गरीबोंको दान देते समय मीठे शब्द बोलो। दान दी जानेवाली वस्तुसे भी मीठे शब्दोंका मूल्य अधिक है।[४]

तुम्हें पता चले कि तुम्हारा कोई कर्जदार इस हालतमें है कि वह कर्ज ली गयी रकम लौटा नहीं सकता, तो उससे मिलना टाल दो, जिससे वह पशोपेशमें न पड़े।[५]

अपना कर्ज न चुकाकर या अपने नौकरोंको भरपूर मजदूरी न देकर दान देना गलत है।[६]

---

१. ता० सनहेद्रिन, ७३ अ। २. ता० गित्तिजन, ७ ब। ३. ता० बाबा कामा, ११२ अ। ४. ता० सुक्का, ४९ ब। ५. मिदराश, निर्गमन, रब्बा ३१।६। ६. यालकत शिमेओनी, Pro. ९४७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुचित काम करनेके लिए अथवा अपने निजी स्वार्थ या सुख-सुविधाके लिए दान देना गलत है।[1]

पशुओंपर दया

'तज्जार बाले हय्यीम' कहते हैं जीवित प्राणियोंके कष्टको। सबको यह महसूस करना चाहिए कि दूसरे जीवोंको कष्ट न हो।

अपने पशुओंको जबतक चारा न खिला लो, तबतक खुद खाना न खाओ।

किसी भी पशु-पक्षीको खरीदनेके पहले यह देख लो कि उसे खिलानेके लिए तुम्हारे पास काफी चारा-दाना है या नहीं।

सत्कर्म करो

'गेमीलुथ चसादीम' कहते हैं सत्कर्म करनेको। सभी मनुष्यों, सभी प्राणियोंपर दया करनेको।

बीमारोंके पास जाओ। उनकी सेवा करो। उनसे मीठा बोलो। उनसे अच्छा व्यवहार करो।

गरीब लड़कीको विवाहके मौकेपर उपयोगी उपहार भेट करो।

मृतकोंका आदर करो। उनके रिश्तेदारोंसे सहानुभूति प्रकट करो।

हर आदमीका प्रसन्नतासे स्वागत करो।

सबके साथ अच्छा व्यवहार तो करो ही, जो आदमी गलत रास्तेपर जा रहा हो, उसे सदाचारके सही रास्तेपर लानेकी कोशिश भी करो।[2]

---

१. मिदराश, निर्गमन, रब्बा ३१।१८। २. ता० तमीद २८ अ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विचार पवित्र रखो : ८ :

पवित्र रहो। संयमका पालन करो। तुम्हारे सारे काम तो पवित्र हों ही, तुम्हारे विचार भी पवित्र हों। बुरे विचार यदि रोके न गये, तो उनका परिणाम बुरे कामोंसे भी बुरा हो सकता है।[१]

प्रभुसे डरते रहो

प्रभुके जितने भी आदेश हैं, उनमें इस बातपर जोर दिया गया है कि प्रभुसे सदा डरते रहो।[२]

प्रभुसे प्रेम करो

प्रभुसे डरो—इससे तुम बुरे कामोंसे बचोगे। पर इतना ही काफी नहीं। प्रभुसे प्रेम भी करो। अपने सारे कर्म प्रभुको अर्पण कर दो। प्रभुकी सेवामें, मानवकी सेवामें अपनेको बलिदान करो। आत्मदमन करो। संयम करो।

इसे कहते हैं : **'किद्दुश हंशेम'**।

यह है यहूदी-जीवनका सर्वोत्तम आदर्श।

---

१. ता० योमा २९ अ। २. ता० किददूसिन, ३२ ब

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

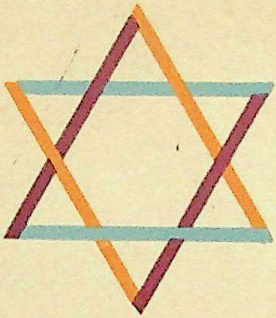

"To what purpose is the multitude of your oblations unto me ?" saith Yahweh.

"...Wash you, make you clean ; put away the evil of your doings from before mine eyes ; cease to do evil, learn to do well ; seek judgement, relieve the oppressed, judge the fatherless, plead for the widow."

—Isaiah 1-11, 16-17

यहोवा कहता है : "तुम्हारे ये सब बलिदान मेरे किस कामके हैं ? ···अपनेको धोकर पवित्र करो। अपने बुरे कामोंको मेरी आँखोंके आगेसे हटाओ। बुराई करना बन्द करो। भलाई करना सीखो। ठीक ढंगसे न्याय करो। पीड़ितोंका दुःख दूर करो।"

—यशायाह १-११, १६-१७

चार्ट अवा. चंद प्रकाशन रजघाट · वाराणसी